वार्षिक 150/- रुपये अगस्त 2025 वर्ष 27 अंक 10 पृष्ठ - 32 मूल्य 15/-रु.

गोसम्पदा

गाय समान रीति से मनुष्यमात्र का भरण-पोषण और कल्याण करती है - मालवीय जी

सम्पादकीय

स्वाधीनता दिवस पर विशेष

गाय समान रीति से मनुष्यमात्र का भरण-पोषण और कल्याण करती है - मालवीय जी

भारत को आजाद हुए 78 वर्ष हो गये हैं। देश को गुलामी की बेड़ियों से मुक्त कराने में महान राजनीतिज्ञों, महापुरुषों एवं अनेकानेक क्रांतिकारियों का अविस्मरणीय योगदान रहा है। स्मरण रहे, स्वतंत्रता प्राप्ति के पूर्व सभी राजनीतिज्ञों ने एक स्वर से सभी देशवासियों को आश्वस्त किया था कि आजादी मिलते ही पहला कानून सम्पूर्ण देश में गोवंश–हत्या पर पूर्ण प्रतिबंध लगाने के लिए बनाया जाएगा। तदुपरांत स्वाधीनता प्राप्त होने के कुछ माह बाद ही 19 नवम्बर 1947 को भारत सरकार के कृषि मंत्रालय द्वारा गोवंश–संरक्षण एवं गोवंश पालन पर भलीभांति विचार–विमर्श करके सम्मति देने के लिए **सर दातार सिंह** की अध्यक्षता में एक **"पशुरक्षण और संवर्धन समिति (Cattle Preservation and Development Committee)"** बनाई गई। इस समिति ने 06 नवम्बर 1949 को अपनी रिपोर्ट दी और गोसंरक्षण तथा गोसंवर्धन की योजना प्रस्तुत करते हुए सिफारिश की कि "चौदह वर्ष से कम उम्र के गोवंश की हत्या त्वरित रोक दी जाए और दो वर्ष के अन्दर–अन्दर सम्पूर्ण गोवंश की हत्या प्रतिबंधित कर दी जाये।"

बावजूद इसके सत्ता सुख भोगने के लोभ में तत्कालीन प्रधानमंत्री जवाहर लाल नेहरु ने मुस्लिम तुष्टिकरण वोट राजनीति को दृष्टिगत रखते हुए समिति की रिपोर्ट की उपेक्षा कर गोवंश–हत्या पर प्रतिबंध नहीं लगने दिया, जो सर्वविदित भी है। दुष्परिणामस्वरूप अभी तक गोवंश–हत्या रोकने के लिए राष्ट्रीय कानून नहीं बनाया जा सका और आज भी गोवंश–हत्या निर्बाध गति से जारी है। अनेक राज्यों में तो मात्र हिन्दुओं की आस्था को आघात पहुंचाने के उद्देश्य से ही सार्वजनिकरूप से खुलेआम गोवंश–हत्या की जा रही है। सच तो यह है कि केवल और केवल मुस्लिम तुष्टिकरण वोट राजनीति का ध्यान रखते हुए ही योजनाबद्ध ढंग से षड्यंत्रपूर्वक यह अक्षम्य अपराध किया जाता रहा है और कुछ अंश में यह दुष्कृत्य अभी भी किया जा रहा है।

उल्लेखनीय है कि स्वाधीनता मिलने के पूर्व से ही गोवंश–हत्या पूर्णतः बंद कराने हेतु अनेक महापुरुषों ने तन–मन–धन से अथक प्रयास–संघर्ष किया। **महामना मदन मोहन मालवीय जी** भी उन विभूतियों में से एक थे। मालवीय जी के शब्दों में "धर्म (सनातन धर्म) का ऐसा आदेश है कि प्राणीमात्र में जैसी जिसकी योग्यता हो, उसके अनुसार उसको देखना और उसके प्रति वैसा व्यवहार करना चाहिए। पशु–पक्षी, पेड़–पौधे सभी प्रकृति के घटक हैं। सब का अपना–अपना मूल्य है। सब को जीवित रहने का अधिकार है। विनष्ट करने का अधिकार किसी को नहीं है। ये अपने लिए नहीं जीते, दूसरों के लिए जीते हैं।" इसीलिए मालवीय जी आगे कहते हैं कि मनुष्यमात्र का "अपने समान सुख–दुःख का अनुभव करने वाले जीवधारियों की सेवा करना, उनका उपकार करना यह त्रिकाल में सार्वलौकिक सत्य धर्म है।" वे गोसेवा एवं गोरक्षा के प्रबल समर्थक थे। उनका कहना था कि "गाय मनुष्यजाति का भरण–पोषण करने के साथ ही उनका सब प्रकार से उपकार–कल्याण करती है। इसलिए उसकी सेवा एवं रक्षा करना मनुष्यमात्र का परम कर्तव्य है। वे आजीवन गौ की सेवा करते रहे तथा अन्य लोगों को भी उस दिशा में कार्य करने के लिए प्रेरित करते रहे। उन्हीं के शब्दों में "हमको यह स्मरण रखना चाहिए कि गाय समान रीति से मनुष्यमात्र का भरण–पोषण करती है, इसलिए सब जाति, धर्म और सम्प्रदाय के मनुष्यों को भी गोवंश की रक्षा करने, उसके साथ न्याय तथा दया का वर्ताव बढ़ाने में, प्रेम के साथ शामिल होना चाहिए।" ध्यान रहे, गोमाता धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष चारों पुरुषार्थ प्रदान करने में भी समर्थ हैं।

(सम्पादक)

गोसम्पदा

वर्ष - 27 अंक-10 अगस्त - 2025 पृष्ठ - 28

संरक्षक :
हुकुमचंद सावला जी

दिनेश उपाध्याय जी
अखिल भारतीय गोरक्षा प्रमुख
संकट मोचन आश्रम, सै. 6,
रामकृष्णपुरम, नई दिल्ली-22
मो. : 9644642644
ईमेल : gosampada@gmail.com

सम्पादक : देवेन्द्र नायक
संकट मोचन आश्रम, सै. 6,
रामकृष्णपुरम, नई दिल्ली-22
मो. : 8130049868 कार्या. 011-26174732
ईमेल : gosampada@gmail.com

परामर्शदाता : प्रो. गुरुप्रसाद सिंह जी
मो. : 9838900596

प्रकाशक : राजेन्द्र प्रसाद सिंहल जी
मो. : 9810055638

प्रचार-प्रसार प्रमुख : डॉ. नरेश शर्मा जी
9811111602

व्यवस्थापक : रामानन्द यादव
मो. : 9958710672 कार्या. : 011-26174732

साज-सज्जा : सुमन कुमार

वैधानिक सूचना
'गोसम्पदा' से संबन्धित सभी वाद प्रकाशन तिथि से 3 माह के अंदर केवल नई दिल्ली स्थित न्यायालय में मान्य होंगे

सहयोग राशि
एक प्रति : रु. 30/-
वार्षिक : रु. 150/-
आजीवन : रु. 1500/-

अनुक्रमणिका

विषय	पृष्ठ
गौ राष्ट्रीय यात्रा 2025 'गोबर क्रांति'	04
गोवंश के दुखों का कारण हमारी धर्मनिरपेक्षता	07
पंचगव्य : रुग्णानुभव	11
गोरक्ष प्रांत की दो दिवसीय बैठक संपन्न	13
गोमाता : भारतीय संस्कृति की संवाहक	14
देश की सबसे बड़ी गौशाला का हुआ भूमि पूजन	16
गोमूत्र से होगा डायबिटीज, हार्ट समेत उन्नीस बीमारियों का इलाज	17
राजधानी के हर जिले में बनेगी गोशाला,	18
जैविक आहार, जो बढ़ा रहा गोवंश की प्रजनन क्षमता	19
निराश्रित गोमाता का आश्रय श्री माधव गौ उपचार केन्द्र	20
मानव सेवा के लिए पूर्ण समर्पण	21
Gau-Vigyan : Exploring the Scientific Strength of India's Indigenous Cattle	22
The Eternal Beauty and Glory of Desi Cow (Gomata)	24

हार्दिक मंगलकामनाएं
पवित्र-पावन पर्व रक्षाबंधन
श्रीकृष्ण जन्माष्टमी और स्वाधीनता दिवस की
सभी देशवासियों को हार्दिक मंगलकामनाएं!

पूजा पाराशर, स्वतंत्र लेखिका

गौ राष्ट्रीय यात्रा 2025 'गोबर क्रांति' (ब्राउन रेवलूशन)

जिसने गोमाता को जाना है उसने अपना जीवन गौ सेवा में लगा दिया है। राष्ट्र उत्थान हेतु गोमाता का कितना महत्वपूर्ण स्थान है **'गौ राष्ट्रीय यात्रा 2025'** इसका एक बड़ा उदाहरण बन गया है। इस यात्रा ने संपूर्ण भारत को एक सूत्र में बाँधकर यह दिखाया है कि हम किसी भी क्षेत्र में बसते हों परंतु हम सब गोमाता की ही संतान हैं और गोमाता के प्रति जो कर्तव्य हैं, उन्हें संतान को निभाना भी अति आवश्यक है। ऋषिकेश से रामेश्वरम तक 10127 किलोमीटर की दूरी को तय कर रही यह पदयात्रा सभी भारतीयों को आकर्षित और गोमाता के प्रति जागरूक कर रही है। इस यात्रा का उद्देश्य देसी गायों के महत्व को जन–जन तक पहुँचाना एवं गोवंश –आधारित आत्मनिर्भर अर्थव्यवस्था के लाभों के प्रति समाज को जागरूक करना है। यह यात्रा गौपालकों और किसानों के न मात्र स्वाभिमान को जगा रही है, अपितु गोबर, गोमूत्र और पंचगव्य के माध्यम से ग्रामीण अर्थव्यवस्था को मजबूत करने का मार्ग भी प्रशस्त कर रही है, जो देश की आर्थिक प्रगति में भी सहायक सिद्ध होगी।

'गौ राष्ट्रीय यात्रा 2025' एक ऐसी आध्यात्मिक यात्रा है, जहाँ स्वयं को गोमाता और राष्ट्र से जोड़कर, जीवन के उद्धार हेतु कदम बढ़ाए गये हैं। 15 जून 2025 को प्रारंभ हुई 61 दिन की यह यात्रा 12 राज्यों उत्तराखंड, उत्तर प्रदेश, मध्य प्रदेश, छत्तीसगढ़, महाराष्ट्र, तेलंगाना, कर्नाटक, आंध्र प्रदेश आदि से गुजरती हुई 10127 किलोमीटर तय करेगी और तमिलनाडु के रामेश्वरम में इस यात्रा का समापन होगा। इसे 'गोबर की क्रांति' (ब्राउन रेवलूशन) माना जा रहा है। यह एक राष्ट्रव्यापी आंदोलन है, जिसका उद्देश्य भारतीय संस्कृति व गो संस्कृति का संरक्षण करना है।

'गौ राष्ट्रीय यात्रा 2025' एक ऐसी आध्यात्मिक यात्रा है, जहाँ स्वयं को गोमाता और राष्ट्र से जोड़कर, जीवन के उद्धार हेतु कदम बढ़ाए गये हैं। 15 जून 2025 को प्रारंभ हुई 61 दिन की यह यात्रा

गौ राष्ट्रीय यात्रा के मुख्य उद्देश्य हैं–

- **गोमाता को राष्ट्रमाता** के रूप में सांवैधानिक मान्यता।
- गोमाता को सांवैधानिक दर्जा देने के लिए एक राष्ट्रव्यापी याचिका और विधायी प्रयास शुरू करना तथा राष्ट्रीय, सांस्कृतिक और आध्यात्मिक प्रतीक के रूप में उनकी सुरक्षा सुनिश्चित करना।
- 100 से अधिक गौ संरक्षण संस्थाओं के साथ जुड़ाव।
- संवाद, साझा संसाधनों और बचाव, पुनर्वास और संरक्षण के लिए समन्वित प्रयासों के माध्यम से गौशालाओं और गौ आश्रयों के नेटवर्क को मजबूत करना।
- गौ संरक्षण के लिए एक राष्ट्रीय नीति ढांचा : आश्रय प्रबंधन, स्वास्थ्य देखभाल, पोषण, सुरक्षा और परित्यक्त एवं वृद्ध गायों के पुनर्वास पर केंद्रित एक व्यापक राष्ट्रीय गौ संरक्षण नीति का मसौदा तैयार करना और उसका प्रस्ताव केन्द्र सरकार को सौंपना।
- पंचगव्य आधारित कृषि और ग्रामीण आजीविका को बढ़ावा देना।
- गाय के उत्पादों का उपयोग करके टिकाऊ, रसायन मुक्त खेती पर प्रकाश डालना और उसका समर्थन करना तथा गोबर–घट इकाइयों, वर्मीकम्पोस्ट और प्राकृतिक सौंदर्य प्रसाधनों जैसे गोवंश आधारित ग्रामीण उद्यमों को प्रोत्साहित करना।
- गोवंश–केंद्रित जैव–अर्थव्यवस्था का विकास
- शहरी और ग्रामीण बाजारों के लिए आयुर्वेदिक दवाओं, जैव–उर्वरकों और पर्यावरण–अनुकूल विकल्पों सहित गौ–उत्पाद उद्योगों में अनुसंधान और नवाचार को बढ़ावा देना।
- गौशालाओं के लिए आत्मनिर्भर योजनाएँ बनाना।
- सीएसआर फंडिंग, सरकारी सहायता और गाय के गोबर और गोमूत्र से बने आत्मनिर्भर उत्पाद मंगाने हेतु आनलाइनों के माध्यम से गौशालाओं के लिए व्यवहार्य वित्तीय मॉडल का प्रस्ताव करना।
- गोवंश–आधारित नवाचार में अनुसंधान के लिए समर्थन।
- गोवंश से प्राप्त उत्पादों के पर्यावरणीय और औषधीय लाभों पर उन्नत अनुसंधान के लिए विश्वविद्यालयों, पशु चिकित्सा संस्थानों और आयुर्वेदिक निकायों के साथ सहयोग करना।

12 राज्यों उत्तराखंड, उत्तर प्रदेश, मध्य प्रदेश, छत्तीसगढ़, महाराष्ट्र, तेलंगाना, कर्नाटक, आंध्र प्रदेश आदि से गुजरती हुई 10127 किलोमीटर तय करेगी और तमिलनाडु के रामेश्वरम में इस यात्रा का समापन होगा। इसे **'गोबर की क्रांति' (ब्राउन रेवलूशन)** माना जा रहा है। यह एक राष्ट्रव्यापी आंदोलन है, जिसका उद्देश्य भारतीय संस्कृति व गो संस्कृति का संरक्षण करना है। इस यात्रा ने भारतीय जनों का ध्यान आकर्षित किया है। यात्रा जिस जिले में प्रवेश करती है, वहाँ का दिन व माहौल त्योहार की भाँति प्रतीत होता है। वहाँ सांस्कृतिक कार्यक्रम, गौ पूजा, आध्यात्मिक प्रवचन और ग्राम सभाएँ आयोजित की जाती हैं।

'गौ राष्ट्रीय यात्रा' 2025 का नेतृत्व (राष्ट्रीय गौ सेवक संघ (आरजीएसएस), स्वदेशी मवेशी विकास, ट्रस्ट, माटी इंडिया, कामधेनु गौवेदा आदि संस्थान कर रहे हैं।

यात्रा के राष्ट्रीय संयोजक नरेंद्र कुमार ने ऋषिकेश में अपने उद्घाटन वक्तव्य में कहा, "यह हमारे लिए एक यात्रा से कहीं अधिक है। यह भारत की सामूहिक चेतना को जागृत करने का एक आध्यात्मिक आह्वान है। हम माँग करते हैं कि गोमाता को राष्ट्रमाता के रूप में सांवैधानिक मान्यता दी जाये। इसके अलावा, हमने गौपालकों और गौसेवकों की आवाज़ को अंतिम छोर तक पहुँचाने के लिए यह यात्रा शुरू की है। गौ राष्ट्री यात्रा 2025 का मिशन गौ–संस्कृति का संरक्षण और देश की सांस्कृतिक और आर्थिक प्रगति के आधार के रूप में गोवंश–आधारित

जीवन शैली का निर्माण करना है।"

"इस 61–दिवसीय यात्रा में, हम विभिन्न गाँवों और शहरों में जायेंगे और गौपालकों और किसानों को जागरूक करेंगे। हम उनकी कहानियाँ सुनेंगे और उन कहानियों को उन गाँवों में रहने वाले लोगों के लिए प्रेरणा स्रोत के रूप में उपयोग करेंगे जो अभी भी आर्थिक स्रोत के रूप में गायों के महत्व को नहीं समझ पा रहे हैं। भारत में ग्रामीण समुदाय अन्य उत्पादों के अलावा, गोबर के उपले, अगरबत्ती, साबुन और गोबर के पेंट के उत्पादन और बिक्री में आर्थिक अवसर तलाश रहे हैं। हमारा मानना है कि इस यात्रा के अंत तक, हम लाखो लोगों के जीवन को बदलने में सक्षम होंगे।"

रोहित बिष्ट ने बताया कि अपनी गौसमर्थन कार्य योजना 2025 के तहत, दूरदराज और वंचित क्षेत्रों में 100 से अधिक गौशालाओं को सहायता प्रदान की गई है। उन्होंने मीडिया से बात करते हुए कहा, "गाय हमारी कृषि संस्कृति, हमारी ग्रामीण अर्थव्यवस्था और हमारी वैदिक जीवन शैली का आधार है। जब गोमाता की रक्षा होती है, तो धर्म की रक्षा होती है। अगर हम गोमाता को निराश करते हैं, तो हम भारत को भी निराश करते हैं।" वास्तव में यह अपनी जड़ों से फिर से जुड़ने की यात्रा है। जब कोई राष्ट्र अपनी माँ को भूल जाता है, तो वह अपनी आत्मा खो देता है।

राष्ट्रीय समन्वयक, वेणुगोपाल नायडू ने कहा, "यदि भारत को विश्वगुरु बनाना है, तो उसे सबसे पहले गोमाता की सेवा और उनके जीवन को बेहतर बनाने में गुरु बनना होगा। हम 12 से अधिक राज्यों में विभिन्न अभियानों के माध्यम से जागरूकता फैलाकर गायों के प्रति प्रेम और सम्मान की भावना पैदा कर रहे हैं। हम चाहते हैं कि गायें सम्मान से भरा जीवन जिएं। **गोमाता का अपमान भारतमाता का अपमान है।"**

'गौ राष्ट्रीय यात्रा 2025' किसी एक संगठन या समुदाय की यात्रा नहीं है यह तो सभी भारतवासियों की यात्रा है, जहाँ हमें अपने मन और कर्म दोनों से ही गोमाता की सेवा, उसके संरक्षण और देश की प्रगति हेतु कदम बढ़ाने होंगे। चलिए हम भी इस 'गोबर क्रांति' का एक भाग बनते हैं और देश के उत्थान में अपनी भागीदारी दर्ज करते हैं!

आनंद का मार्ग

मनुष्य की स्वयं की शांति को भंग करने का सबसे सरल मार्ग है दूसरे के दोष एवं कमियों को ही देखते रहना। जबकि व्यक्ति को स्वयं की कमियों को देखना, अपनी निंदा को स्वीकारना एवं सुधार के लिए प्रयास करना चाहिए। निंदा से विचलित न होकर सुधार की दिशा में सोचना ही सही मार्ग है। जो आपकी निंदा करते हैं, उनकी शांति एवं सद्भाव जागृति हेतु हृदय से प्रार्थना करें, यही समस्या का समाधान और शांति का पथ है। हमारे भीतर ऐसी भावनाएं स्पंदित हों, जहां मैं और तुम के बीच भेद न बचे। इस निःशेष की यात्रा में ही एक अनुत्तरित प्रश्न का उत्तर मिलेगा –**जो तू है वही मैं हूं, जो मैं हूं, वही तू है।** यहां उस चेतना को स्वीकृति नहीं मिलती कि मन तो मंदिर में हो, लेकिन वह पूर्ण रूप से वहां न होकर संसार में भटकता रहे।

बुरे–से–बुरे व्यक्ति में और बुरी–से–बुरी परिस्थिति में भी अच्छाई छिपी रहती है, उसे समझने वाला व्यक्ति ही समस्यामुक्त जीवन का पथिक होता है। यहीं पर जीवन से जुड़ी समस्याओं और सवालों का समाधान सामने खड़ा दिखता है। तभी व्यक्ति बदलता है बाहर से भी और भीतर से भी। वर्षों तक मंदिर की सीढ़ियां चढ़ी, घंटों–घंटों हाथ जोड़े, आंखें बंद किए खड़े रहे, प्रवचन सुना, शास्त्र पढ़े, मगर न मन बदला और न चिंतन और न कर्म बदला तो फिर समझना चाहिए कि सारा पुरुषार्थ मात्र ढोंग था। यह सबके बीच स्वयं को श्रेष्ठ साबित करने का बहाना था। जबकि स्वयं को श्रेष्ठ बनाने का मार्ग है–प्रत्येक व्यक्ति की अच्छाई की प्रशंसा करो, उसकी सराहना करो। इससे स्नेह एवं मैत्री भाव का प्रसार होगा। आप सर्वप्रिय हो जायेंगे और शांति होगी आपकी सहचरी एवं आनंद होगा आपका अनुचर। **'परस्परोपग्रहो जीवानाम'** ही अपने दुख को भूलने की अनुपम औषधि है। दूसरे का दुख दूर करना, औरों के अधरों पर मुस्कान लाना, दूसरों की भलाई की सोचना एवं प्रभु से उनके लिए प्रार्थना करना ईश्वर को बहुत प्रिय है। ऐसा करके आप प्रभु के कृपापात्र बन सकते हैं।

– ललित गर्ग

हरिशंकर दीक्षित 'पथिक'

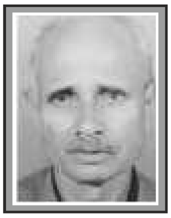

गोवंश के दुखों का कारण हमारी धर्मनिरपेक्षता

किसी भी समस्या के निदान के लिये उसके उत्पन्न होने के कारण जानना आवश्यक है। आज हमारे देश में हमारा मातृ–पितृवत गोवंश "जिसके अवलम्ब से हमारे पूर्वज जीवनयापन करते हुए अपने कर्तव्यों (धर्म) का पालन भी करते रहे हैं", हमारे ही द्वारा विलुप्ति की कगार पर ठेला–ढकेला जा रहा है। यह ऐसी विकट समस्या है जो धरती की शिव–सुन्दर जैविक सृष्टि के लिए ही घातक सिद्ध होती जा रही है। अनेक जैविक प्रजातियों का विलुप्त होना इसका प्रमाण है। यही नहीं, मनुष्यों की जीवनी शक्ति अर्थात् रोग प्रतिरोधक क्षमता का भी ह्रास होता जा रहा है। यह सब हो रहा है हमारी धर्म विमुखता के कारण।

हमारे आर्ष ग्रन्थों के अनुसार मनुष्य की रचना धरती पर अन्तिम जैविक रचना है, जिसे ईश्वर ने अपने सृष्टि कौतुक की कल्पान्त तक निरन्तरता बनाये रखने वाली प्रकृति के सहायक सहचर गोवंश के पालन–पोषण और रक्षा करने के लिए रचा है। गोवंश मनुष्य के जीवनयापन का सुदृढ़ आधार होने के साथ ही प्रकृति के उपकरण पर्यावरण को पुष्ट–पवित्र बनाये रखने का साधन भी है। इसके घृत को अन्यान्य सुगन्धित द्रव्यों के साथ गोमय के उपलों और औषधीय काष्ठ की अग्नि में हवि रूप में डालकर हवन करने से द्रव्यों की शक्ति सहस्त्रों गुना बढ़ जाती है, जो गन्ध रूप में वायु के साथ वायुमण्डल में फैलकर वायु को शुद्ध करती है। वायु शुद्ध करने से तात्पर्य यह है कि प्राणियों द्वारा जो स्वाभाविक प्रदूषण पर्यावरण में होता है वह इन द्रव्यों की गन्ध से नष्ट हो जाता है। इस प्रकार पर्यावरण निरन्तर शुद्ध होता रहता है।

मनीषियों से आग्रह है कि वे मजहबों–सम्प्रदायों को धर्म कहकर धर्म के पावन शिव–सुन्दर स्वरूप को विकृत कर टुकड़े–टुकड़े करने वालों का विरोध कर धर्म के सुन्दर स्वरूप की रक्षा करें। साथ ही संविधान की प्रस्तावना सहित संविधान से धर्मनिरपेक्ष जैसे अमंगलकारी शब्द को यथाशीघ्र हटाने हेतु सरकार पर दबाव बनायें। हमारा गोवंश तब ही सुखी–सुरक्षित होकर हमें आशीष देगा जब हम धर्माचारी होकर उसका पालन–पोषण ससम्मान करेंगे। यदि हम ऐसा नहीं करेंगे तो धरती माता की सुन्दर सृष्टि का विनाश करते हुए स्वयं भी विनिष्ट हो जायेंगे।

मनुष्य शरीर ऐसा सुसज्जित उन्नत यन्त्र है जिसकी रचना ईश्वर ने अपने सृष्टि कौतुक के उद्देश्य की पूर्ति के लिये समस्त रचनाओं के पश्चात् अन्त में की है। समस्त इन्द्रियाँ इस अद्भुत विलक्षण यन्त्र के उपकरण (अंग–उपांग) हैं। इनमें ज्ञानेन्द्रियाँ अति महत्वपूर्ण हैं। यही कर्मेन्द्रियों को निर्देशित करती हैं। हमारे आदि पुण्यात्मा पूर्वजों को

ज्ञानेन्द्रियों ने ही सृष्टि में अपने कर्तव्यों (धर्म) को जानने के लिये प्रेरित किया। तब उन्होंने गहन अध्ययन–मनन रूपी कठोर तप करते हुए सृष्टि रचना के गूढ़ उद्देश्य को प्रकृति के कण–कण में भासमान सृष्टि रचनाकार का दर्शन कर उससे ही जाना। ईश्वरीय उद्देश्य की पूर्ति के लिये मनुष्य के कर्तव्यों को उन्होंने एकवचनीय संज्ञा **धर्म** के रूप में प्रतिष्ठित किया और अपनी भावी सन्तानों के लिये **मानवधर्मशास्त्र** की रचना की। इसमें मनुष्यों के समस्त करणीय कर्मों का वर्णन है। इन्हीं करणीय कर्मों को कर्तव्य कहा गया है। स्पष्ट है कि मनुष्य के समस्त करणीय कर्म अर्थात् कर्तव्य धर्म में समाहित हैं और मानवधर्मशास्त्र हमारा प्राकृतिक संविधान है, जो समग्र सृष्टि के लिए मंगलमय सुखद भविष्य को ध्यान में रखकर ही हमारे आदि पुण्यात्मा पूर्वजों द्वारा ईश्वरीय इच्छानुसार रचा गया है।

मानवधर्मशास्त्र के अनुसार धरती पर रची गयी समस्त जैविक रचनायें परस्पर पूरक हैं और इनमें सबसे अन्तिम दो रचनायें क्रमशः गो और मनुष्य हैं, जो अति महत्वपूर्ण हैं। इनमें भी मनुष्य जो गोपालन और उसका संरक्षण करते हुए, उसकी शक्ति सम्पदा का सदुपयोग कर अपना जीवनयापन करते हुए गोघृतादि द्वारा हवनादि करके प्रकृति के उपकरण पर्यावरण को निरन्तर शुद्ध–पुष्ट बनाये रखने के लिये रचा गया है, वह ईश्वर को सर्वाधिक प्रिय है। हमारे आदिकालीन ऋषि इस कोटि में प्रथम क्रमांक पर थे। इनके आश्रमों में सैकड़ों गोवंश का पालन–पोषण होता था। इनके आश्रम गोत्र कहे जाते थे जो इन्हीं ऋषियों के नाम से ख्यात थे। इनके शिष्यों की ख्याति (पहचान) इन्हीं ऋषियों के गोत्र के नाम से ही होती थी। यह परम्परा आज तक प्रत्येक वर्ण में देखी जा सकती है। यथा गौतम, कश्यप, शाँडिल्य और भारद्वाज आदि गोत्र चारों वर्णों में पाये जाते हैं।

कोई भी उत्तमोत्तम व्यवस्था काल के प्रवाह के साथ दूषित हो सकती है। इसी आधार पर हमारा आदिकालीन संविधान मानव धर्मशास्त्र भी दूषित होते–होते अपना पावन स्वरूप खो बैठा। इसे समर्थ किन्तु स्वार्थी लोगों ने अपने हितानुसार प्रक्षेपित कर अनेक संशोधन किये। यह संशोधन वैसे ही हुए माने जा सकते हैं जैसे हमारे देश में संविधान संशोधन अनेक बार हुए हैं। यहाँ तक कि आज हमारे संविधान की प्रस्तावना तक अपना मूल स्वरूप खो चुकी है। कोई भी संशोधन देश समाज हित में हो तब तो उचित है, किन्तु निजी स्वार्थ की पूर्ति हेतु किये गये संशोधन संविधान की पवित्रता दूषित करके देश और समाज को भारी क्षति पहुँचाते हैं। हमारे आदि संविधान ''मानवधर्मशास्त्र को अपने क्षुद्र स्वार्थ की पूर्ति हेतु प्रदूषित करने वाले लोगों ने हमारे देश और समाज को जो क्षति पहुँचायी, उसके फलस्वरूप हमारे देश के श्रमिक वर्ग में शासकों के प्रति निष्ठा में

भारी ह्रास उत्पन्न होता गया। रामायण की चौपायी *''कोउ नृप होय हमहिं का हानी। चेरि छाँड़ि नहिं होउब रानी।।''* प्रजा की शासन के प्रति निष्ठा में हुए ह्रास के आधार पर ही लिखी गयी प्रतीत होती है। इसे गोस्वामी तुलसीदास जी ने लगभग पाँच सौ वर्ष पूर्व जनमानस की भावना के आधार पर ही लिखा होगा ऐसा प्रतीत होता है।

आज हमारा देश लोकतान्त्रिक देश के रूप में विख्यात है। हमारा नया संविधान है जिसमें मनुस्मृति की दूषित बातों का कोई स्थान नहीं है किन्तु इसमें भी हमारे स्वार्थी अविवेकी कर्णधारों ने अनेक क्षेपण करके प्रदूषित करने का पाप किया है। यहाँ तक कि प्रस्तावना तक को प्रदूषित करने का देशघाती पाप करके संविधान को धर्मनिर्पेक्ष अर्थात् कर्तव्यों से उदासीन तक बना दिया है। वस्तुतः हमारे इन कर्णधारों को धर्म शब्द के ठीक अर्थ तक का ज्ञान नहीं था या नहीं है। इन्होंने विभिन्न ईशोपासना पद्धतियों को धर्म मानकर धर्म के लोकमंगलकारी पावन स्वरूप को टुकड़ों में काटकर विकृत कर डाला। इनके सहायक सहचर, ''जो धर्म को अफीम जैसे शब्दों द्वारा गरियाते रहे हैं'', के प्रभाव तथा अंग्रेजों की कूट–फूटनीति का दुष्प्रभाव पीढ़ी दर पीढ़ी अब तक चला आ रहा है। जहाँ भी इन धर्म विरोधियों का स्वार्थ सिद्ध होता है वहाँ यह सब इनके साथ आज भी खड़े रहते हैं।

कोई माने या न माने किन्तु यह ध्रुव सत्य है कि जब से हमारे संविधान में धर्मनिर्पेक्ष–धर्मनिरपेक्षता जैसे लोकमंगल विरोधी शब्दों का प्रक्षेपण किया गया है तब से हमारे देश में हमारे सर्वदेवमय गोवंश पर भीषण–गहन संकट छाना प्रारम्भ हुआ और बढ़ते–बढ़ते इतना भयावह–दुखद हो चुका है कि आज हमारा मातृ–पितृवत आदरणीय गोवंश हमारे द्वारा ही उपेक्षित–तिरस्कृत होकर गली–गली मारा–मारा फिरता हुआ विलुप्ति की कगार तक ढकेला–पहुँचाया जा रहा है। यह दुष्कृत्य हमारे धर्मनिरपेक्ष संविधान अर्थात् कर्तव्यों से उदासीन होने के कारण ही हमारे द्वारा किया जा रहा है। आज भी बहुत से लोग हैं जो धर्म के महत्व और महत्ता को जानते–समझते हैं और अपने कर्तव्यों का पालन यथाशक्ति करने का प्रयास करते हैं। ऐसे लोगों के कारण ही हमारा देश विश्व में पुनः प्रतिष्ठित हो रहा है।

विशेष ध्यान देने की बात यह है कि ऐसे लोग देवालय में, घर में या अन्यत्र जब ईशोपासना करते हैं तो ईश्वर से स्वधर्म पालन करने की शक्ति–सामर्थ्य और जगत का कल्याण आशीर्वाद के रूप में माँगते हैं। दुखद यह है कि ऐसे लोग जब धर्म का पालन करते हुए अपना जीवन सार्थक करने का सफल प्रयास करते हैं, तो धर्म को अफीम मानने वाले लोग इनकी टाँगें खींचने का प्रयास करते हैं। ऐसे धर्म विरोधी लोग प्रकृति, धरती और गौ को माता नहीं अपितु संसाधन भर ही मानते हैं।

1965 ई. वह दुर्भाग्यपूर्ण वर्ष था जब हमारा देश अपने कट्टर मजहबी–जेहादी शत्रु से युद्ध में जीतकर भी वार्ता की मेज पर पूर्णरूपेण सफल नहीं हो पाया था। इसी वर्ष हमारे देशी गोवंश पर धर्मनिर्पेक्षता के कारण छाये गहन संकट के बादलों को बरसने के लिये वातावरण – हरित क्रान्ति के नारे ने बना दिया। इस प्रकार एक ट्रैक्टर के कृषि क्षेत्र में प्रवेश ने लगभग तीस बैलों को अनुपयोगी बनाकर कृषि क्षेत्र से बाहर कर दिया। इन अनुपयोगी होते गये बैलों को स्वधर्म से निर्पेक्ष अधिकारियों ने वृद्ध अथवा विकलांगता का प्रमाण पत्र देकर इन्हें बूचड़खानों तक ले

जाने का मार्ग प्रशस्त कर दिया। दशा यहाँ तक पहुँच गयी कि विकलांगता के प्रमाण–पत्र के लिये बैलों को निर्ममता से लँगड़ा या अन्धा तक बनाया जाने लगा। इस प्रकार हमारी धर्मनिरपेक्ष सरकारों को गोमांस निर्यात से विदेशी मुद्रा प्राप्त होने लगी और कसाइयों तथा गोतस्करों को भारी धन लाभ होने लगा। यहाँ तक कि स्वधर्म पालक किसान तक स्वधर्म से ऐसे उदासीन हो गये कि इन्हें गोवंश से अरुचि होने लगी। यह अरुचि आज घृणा का रूप धारण कर चुकी है, जो निकट भविष्य में देश–समाज घातक सिद्ध होने वाली है।

गोवंश प्रकृति माता का सहायक सहचर है। इसके दुख से धरती और प्रकृति दोनों ही अतीव दुखी हैं। आचार्य चाणक्य ने अपने ग्रन्थ अर्थशास्त्र में कहा है–प्रकृति का कोप समस्त कोपों से भारी होता है। प्रकृति माता निरन्तर कुपित होती जा रही है जो प्रतिवर्ष बढ़ते जाते वैश्विक ताप से स्पष्ट दिखायी दे रहा है। विडम्बना यह है कि हम इसे देखते–अनुभव करते हुए भी प्रमादवश अनदेखा कर रहे हैं। गोवंश की उपेक्षा करके हम धरती माता की उर्वरा शक्ति को भी निरन्तर क्षीण करते जा रहे हैं। **रासायनिक उर्वरक और कीटनाशक नीम चढ़े करेले** की लोकोक्ति को चरितार्थ कर रहे हैं। आधुनिक तकनीकि का दुरूपयोग करते हुए बाजार ने हमें ऐसा मशीनाश्रित बना दिया है कि कठोर परिश्रम करने की शक्ति हमसे दूर होती जा रही है। यह सब हो रहा है केवल स्वधर्म के प्रति हमारी उदासीनता के कारण। पचास वर्षों में हम अपने धर्म से इतना उदासीन हो चुके हैं कि समस्त लोकमंगलकारी कर्तव्यों को हमने लगभग तिलाँजलि ही दे दी है। हमारे धर्माचार्य तक विलासिता के पंकट में आकण्ठ डूब चुके हैं। उन्होंने कर्मकाण्डों में आडम्बरों का ऐसा समावेश कर दिया है कि हम इन आडम्बरों को ही धर्म मान बैठे हैं। यहाँ तक कि हम ईश्वर को भी उत्कोचग्राही मानकर ही पूज रहे हैं।

धर्म निरपेक्षता के कारण हम निरन्तर अपने कर्तव्यों से विमुख–उदासीन होते जा रहे हैं और उसी अनुपात में अधिकारों के प्रति दुराग्रही होते जा रहे हैं। हमारे देश में ''मानव अधिकार आयोग" का गठन होना किन्तु "मानव कर्तव्य आयोग" का गठन न होना इसका प्रमाण है। जबकि कर्तव्य पालन करने पर ही मनुष्य फल का पात्र–अधिकारी हो सकता है। हमारे संविधान में जब से धर्म निरपेक्षता जैसी विचारधारा का प्रक्षेपण हुआ है तब से हमारा चरित्र पतनोन्मुखी होता जा रहा है। आज दशा इतनी दूषित हो गयी है कि श्वेतकेशी वृद्धा माताओं सहित अबोध कन्यायें तक पैशाचिकता का आखेट बन रही हैं। पहले ऐसा नहीं था। मानव अधिकार आयोग के गठन से पूर्व दुश्चरित्रता करने वाले को समाज उसका मुँह काला करके गधे पर बैठाकर ऐसा अपमानित करता था कि देखने वाला ही नहीं सुनने वाला तक ऐसे पाप करने से कोसों दूर रहता था।

मनीषियों से आग्रह है कि वे मजहबों–सम्प्रदायों को धर्म कहकर धर्म के पावन शिव–सुन्दर स्वरूप को विकृत कर टुकड़े–टुकड़े करने वालों का विरोध कर धर्म के सुन्दर स्वरूप की रक्षा करें। साथ ही **संविधान की प्रस्तावना सहित संविधान से धर्मनिरपेक्ष जैसे अमंगलकारी शब्द को यथाशीघ्र हटाने हेतु सरकार पर दबाव बनायें।** हमारा गोवंश तब ही सुखी–सुरक्षित होकर हमें आशीष देगा जब हम धर्माचारी होकर उसका पालन–पोषण ससम्मान करेंगे। यदि हम ऐसा नहीं करेंगे तो धरती माता की सुन्दर सृष्टि का विनाश करते हुए स्वयं भी विनिष्ट हो जायेंगे।

वैद्य नंदिनी भोजराज (एम.डी., आयुर्वेद)

पंचगव्य रुग्णानुभव

हरियाली भरा सावन मास आरंभ हो चुका है। रिमझिम बारिश से पेड़–पौधे खिल उठे हैं। इसी ऋतु में कृष्ण कन्हैया का जन्म भी हुआ था। **श्रीकृष्ण जन्माष्टमी** को उत्साह के साथ संपूर्ण भारत में मनाया जाता है। सृष्टि के पालनकर्ता का यह रूप विश्वकल्याण हेतु पृथ्वी पर अवतरित हुआ है। गोकुल में जन्म लिए भगवान ने गोवंश का अनन्य असाधारण महत्व खुद गोसेवा करके समाज के समक्ष रखा है। लेख श्रृंखला में पंचगव्य आयुर्वेद औषधि एवम् पंचकर्म से लाभान्वित लाभार्थियों के अनुभव सर्वसमक्ष प्रस्तुत कर रहे हैं। लाभार्थियों के नाम अलग दिये गए हैं।

आने वाली भारत की भावी पीढ़ी सुदृढ़ हो, आरोग्य संपन्न हो इस हेतु भावी माता–पिता की चिकित्सा कर उन्हें आवश्यक खानपान, दिनचर्या, औषधि के विषय में गो विज्ञान अनुसंधान केन्द्र के महल, देवलापार एवम् शिवाजीनगर चिकित्सलय में नियमित मार्गदर्शन दिया जाता है। लाभार्थियों ने अपने अनुभव स्वयं चिकित्सालय में लिखित दिये हैं। उस आधार पर उनके चिकित्सकों के द्वारा सर्व सम्मति से प्रस्तुत किए गए हैं।

क्रमशः –

सौ. प. प. 23 स्त्री, 7 नवम्बर 2021 ब्रम्हपुरी निवासी सौ. पल्लवी पारधी जी के पति कामधेनु पंचगव्य आयुर्वेद चिकित्सालय में अगस्त 2021 को आए। इस समय उन्होंने बताया कि उनकी पत्नी सौ. प. प. उम्र 23 साल वह साढे चार माह की

गर्भिणी हैं। उनके पेट में जुड़वां बच्चे हैं। गर्भ धारणा के डेढ़ माह पश्चात के परीक्षण में उन्हें पता चला की गर्भ में दो बालक पल रहे हैं। पुनः तीन माह के परीक्षण में यह ध्यान में आया कि एक बच्चे का वजन ठीक से नहीं बढ़ रहा है। पुनः डॉक्टरों की सलाह के अनुसार ध्यान देना शुरू किया। साढ़े चार माह के परीक्षण में पुनः उसी बच्चे का वजन अपेक्षा से बहुत ही कम बढ़ रहा था। अब दोनों बच्चों के वजन में बहुत अंतर आ गया। विश्व हिंदु परिषद के पदाधिकारियों ने उन्हें अपने दवाखाने से संपर्क करने के लिए कहा। आयुर्वेदानुसार ''वातवुध्दी'' की अवस्था को दूर करने हेतु पंचतिक्त घृत, फलघृत, नारायण तैल सेवन के लिए मात्रावत् बताए। बलादि तैल कुनकुना कर लगाने के लिए बताया।

''कोरोना'' के चलते रुग्णा नागपुर नहीं आई थी। योनि पिचु धारण, नाभीपुरण, खान–पान, रहन –सहन का परहेज समझाया, हल्के व्यायाम के लिए मार्गदर्शन दिया एवम् नियमित सात्विक भोजन के लिए बताया। सर्वांग अभ्यंग बताया गया। अगले एक माह के परीक्षण में दोनों का वजन करीब–करीब एक जैसा बढ़ा, लेकिन पहले की कमी तो थी ही। कुछ डॉक्टरों ने एक बच्चा ठीक से नहीं बढ़ रहा है, इस लिए दोनों को भविष्य में धोखा हो सकता है कहकर बच्चे गिराने की भी सलाह दी। लेकिन हमने गोविज्ञान निर्मित औषधि का सेवन शुरू रखने के लिए बताया। अब दोनों बच्चे अंदर बढ़ तो रहे थे लेकिन दोनों में अंतर तो था ही। आठवें माह में छोटे बच्चे का जीवित रहना अब आवश्यक लग रहा था। छोटे बच्चे की अस्वस्थता से बड़े बच्चे को किसी समस्या होने के कारण मजबूरन बाहर न निकालना पड़े यह संभालना था। नाभिपुरण, पादाभ्यंग भी शुरू था। साढ़े आठ

माह में सिझेरियन किया गया। जन्म के बाद तीन घंटे तक दूसरा बच्चा भी जीवित था। आज उनका बड़ा बेटा एकदम स्वस्थ है। अगर आयुर्वेद की पद्धति से शुरू से ही पंचतिक्त घृत, फलघृत आदि औषधियों का सेवन किया जाता तो शायद दोनों बच्चे गर्भाशय में अच्छे पल पाते। आयुर्वेद की इस विलक्षण क्षमता का लाभ लोगों को जरूर लेना चाहिए।

सौ.अ.ब. 23, स्त्री रुग्णा तरुण वयस्क है। उसकी शादी को 2 साल हुए हैं। रुग्णा नौकरी करती है और उसे खड़े रहकर आठ घंटे काम करना पडता है। उसे अम्लपित की शिकायत है। दिनभर काम करने का उत्साह नहीं रहता। जल्दी थक जाती है। भावी पीढ़ी सशक्त हो इस के लिए संतति होने से पहले भावी माता–पिता का शरीर शुध्द रहना बहुत ही जरूरी है। पेशेंट और उसके पति को हमने समुपदेशन से यह बात समझाई। रुग्णा ने पथ्यों का अनुसरण करके शरीर शुध्दि करवाई। गर्भसंस्कार के वर्ग में नियमित रूप से उपस्थित रहकर नियमों का पालन किया। यथायोग्य व्यायाम किया। योग्य समय आने पर उसे सुदृढ़, निरोगी कन्या प्राप्त हुई।

सौ.अ.पा. स्त्री, 2 अप्रैल 2021 को रुग्णा गोविज्ञान अनुसंधान केन्द्र के लक्ष्मीनगर दवाखाने में आई। माहवारी के समय चिड़चिड़ापन, कमर एवम् पांव में दर्द, साथ ही शरीर में अंदर से ही बहुत गरम लगता था। शादी को 5 साल हुए थे लेकिन गर्भधारणा नहीं हो रही थी। अतः कामधेनु पंचगव्य आयुर्वेद चिकित्सा केन्द्र में वैद्य. नंदिनी भोजराज से सलाह लेने आई। इस समय माहवारी आने का समय 3–4 दिनों का था। अतः पंचतिक्त घृत, लघुसूतशेखर एवम् पंचतिक्त घृत की बस्ती दी गई। माहवारी के पहले लगने वाली शारीरिक उष्णता शुरू हुई थी। पेट में भी हल्का दर्द लग रहा था, किन्तु उपरोक्त चिकित्सा करने पर उस माह में माहवारी आई ही नहीं। परीक्षण उपरान्त गर्भधारणा में जुड़वां बच्चे दिखे। कभी–कभी अधो उदरशूल हो रहा था। अतः नारायण तेल पिचूधारण एवम् फलघृत भी शुरू किया। परहेज, हल्का व्यायाम, बलादि तेल से अभ्यांग आदि सभी औषधियां नियमित शुरू थीं। गर्भ का बढ़ना क्रमशः व्यवस्थित होकर पूर्ण काल होने पर जुड़वां बेटियों ने जन्म हुआ। अब दोनों बेटियां सात माह पूर्ण कर चुकी हैं और पूर्ण रूप से स्वस्थ हैं। रुग्णा को भी अब पहले जैसी कोई परेशानी नहीं है।

सौ. क. र. 53 साल, स्त्री रुग्णा मध्यम वयस्क है। वह गोविज्ञान अनुसंधान केन्द्र, लेन्ड्रा पार्क, रामदासपेठ स्थित चिकित्सा केन्द्र में आई, तब उसे Anal Prolabse की शिकायत थी। मलप्रवृत्ति के समय मांसल भाग बाहर आता है और अब तक अंदर जा रहा था, लेकिन 8–10 दिन से वह अंदर नहीं जा रहा था। कुर्सी पर बैठने में वेदना हो रही थी। रुग्णा का रजोदर्शन हुआ तब से Heavy Bleeding उसकी Hysterectomy हुई थी। रुग्णा के दिनचर्या में बदलाव होने से शिरःशूल और उल्टी होती थी। रातभर नींद होने से नॉर्मल लगता है। 32 वर्ष पहले delivery के समय Anal Prolapse की शिकायत हुई थी और औषधोपचार से उसे लाभ मिला था।

अब 32 साल के बाद फिर से शिकायत होने लगी। Allopath T/T से लाभ नहीं मिला, इसलिए अपने चिकित्सा केन्द्र में आईं। चिकित्सा में उसे पंचतिक्त घृत, लघुसूतशेखर रस सेवन के लिए दिया। नारायण तेल का पिचु धारण और अश्विनीमुद्रा करने के लिए कहा। महिना भर में उसे संपूर्ण लाभ मिला है। रुग्णा अपने चिकित्सा से संतुष्ट है।

गोरक्ष प्रांत की दो दिवसीय बैठक संपन्न

आजमगढ़। विश्व हिंदू परिषद गोरक्षा विभाग के गोरक्ष प्रांत की दो दिवसीय बैठक गत 26–27 जुलाई को पालीवाल मैरिज प्लान में संपन्न हुई। गोरक्षा विभाग (विहिप) के केंद्रीय मंत्री सुरेंद्र लांबा जी का उद्बोधन सभी लोगों को मुख्य रूप से प्राप्त हुआ। उद्घाटन सत्र में गोमाता का पूजन एवं आरती का कार्यक्रम संपन्न हुआ, उसके पश्चात वराह पीठ के पूज्य महाराज महंत श्याम नारायण दास जी की उपस्थिति में दीप प्रज्वलन करके बैठक का प्रारंभ किया गया। विहिप, गोरक्षा विभाग–गोरक्ष प्रांत के 21 जिलों के कार्यकर्ता इस बैठक में उपस्थित रहे। बैठक प्रथम दिन तीन सत्रों में संपन्न हुई एवं दूसरे दिन बैठक चार सत्रों में संपन्न हुई। बैठक में जानकारी दी गई कि अपने यहां पर भगवान विष्णु के अवतार श्री कृष्ण ने भी गोपाल बनना पसंद किया। गोमाता में 33 कोटी देवी देवता निवास करते हैं। गोमाता का धार्मिक आध्यात्मिक, चिकित्सकीय, वैज्ञानिक तथा धार्मिक माहात्म्य पर विभिन्न शास्त्रों में विस्तार से बताया गया है। श्रीमान चंद्रभान सिंह जी क्षेत्र जैविक कृषि प्रशिक्षण प्रमुख ने बताया कि जब से खेती में रासायनिक उर्वरक का उपयोग होने लगा है तब से सूक्ष्म जीवाणु नष्ट होने लगे जो कि खेती के लिए अत्यंत उपयोगी होते हैं। पत्ति के सड़ने से, गोबर के सड़ने से एवं अन्य अपशिष्ट पदार्थों के सड़ने से जो जीवाश्म बनते हैं वह सभी रासायनिक उर्वरकों की वजह से नष्ट हो रहे हैं, जिससे कि धरती दूषित हो रही है और इसी रासायनिक उर्वरकों से पैदा होने वाली फसलें सब्जियां मानव शरीर में कैंसर तथा कई अन्य भयावह बीमारियां पैदा कर रही हैं। बैठक में प्रांत सह संगठन मंत्री विश्व हिंदू परिषद गोरक्ष प्रांत श्री दीपेशजी, प्रांत मंत्री विश्व हिंदू परिषद गोरक्ष प्रांत श्रीमान नागेंद्र सिंह जी, प्रांत मंत्री श्रीमान तारकेश्वर जी प्रांत सह गोरक्षा प्रमुख नागेंद्र कुमार सिंह जी, प्रांत गोरक्षा विभाग के ट्रस्ट "गोरक्षण एवं संवर्धन परिषद" के अध्यक्ष श्रीमान मोहन उपाध्याय जी, प्रांत मंत्री यशपाल सिंह जी, प्रांत कोषाध्यक्ष सुधाकर जायसवाल जी प्रांत गोभक्त महिला प्रमुख श्रीमती रीना जायसवाल जी मुख्य रूप से उपस्थित रहे।

आचार्य अमरनाथजी दीक्षक

गोमाता

भारतीय संस्कृति की संवाहक

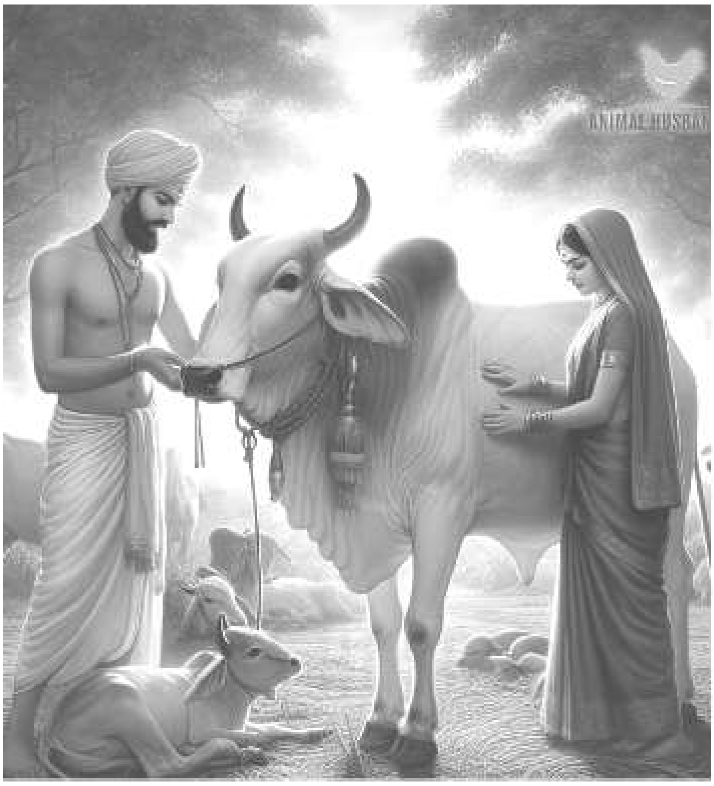

भारतीय सनातन हिन्दू संस्कृति गौप्रधान है। गोरक्षा हिन्दू का स्वाभाविक गुण है। अनेक बातों में मत–मतान्तर होते हुए भी गोरक्षा के प्रश्न पर भारत का हिन्दू ही नहीं, अपितु यहाँ के सिख, जैन, बौद्ध, आर्यसमाजी और विश्नोई सम्प्रदाय के मानने वाले भी गोरक्षा पर एकमत हैं। यहाँ गौ ही एक ऐसा प्राणी है, जिसके द्वारा धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष चारों पुरुषार्थों की प्राप्ति सम्भव है। सभी धर्मग्रन्थों में गाय को माता कहकर पूज्य माना गया है। ब्रह्मवैवर्त, अग्नि, भविष्य, पद्म तथा मत्स्य आदि पुराणों में गौ–चिकित्सा और गोदुग्ध के गुणों का वर्णन है। हमारे ऋषियों ने गोमाता के उदार रहस्यों को जाना था, तभी तो प्रत्येक आश्रम में गाय रखने का प्राविधान निश्चित किया गया था। ऋषि–मुनियों के साथ–साथ हर गृहस्थ अपने परिवार में गौपालन करता था। गौपालन धार्मिक दृष्टि के साथ आर्थिक रूप से भी उपयोगी है। वैदिक एवं पौराणिक काल में प्रत्येक सद्‌गृहस्थ गौपालक था। गाय की सेवा तथा तुलसी की पूजा प्रत्येक सनातन धर्मी गृहस्थ के लिये अनिवार्य थी। गौपालन और तुलसी के पूजन का आशय यही है कि हम इनके द्वारा प्रदत्त वस्तुओं का समुचित उपयोग करें और अपने जीवन को स्वस्थ, समृद्ध और संस्कारवान् बनायें। प्राचीन ऋषि अपने आश्रमों में इसीलिये गाय रखते थे। ऋषि–मुनियों एवं गृहस्थों की गौसेवा सम्बन्धी अनेक कथाएँ जनमानस में प्रचलित हैं। गाय अत्यन्त उपकारी होने के साथ–साथ मोक्षदायिनी भी है–**'गावो विश्वस्य मातरः।'** ऋषियों ने इसे जगन्माता कहकर सम्मानित किया है। गोमाता **धर्म** का मूलाधार है। प्रत्येक धर्मकृत्य गव्यपान से आरम्भ होता है। गाय के गोबर से लीपना, गोबर से गौरी का निर्माण, पंचगव्यप्राशन आदि हमारे धार्मिक कार्यों के अंग हैं।

गोमाता का प्रादुर्भाव – सृष्टिक्रम में वर्णित है कि भगवान् ब्रह्मा ने दक्ष प्रजापति को सृष्टि–रचना का आदेश दिया। उन्होंने सृष्टि की रचना की। सृष्टि का सबसे बुद्धिमान् प्राणी मनुष्य बनकर

तैयार हो गया, पर वह था बहुत कमजोर। उसे दीर्घायु और शक्तिमान् बनाने की इच्छा से प्रजापति भगवान् ब्रह्मा के पास गये। उस समय भगवान् ब्रह्मा भी श्रमित थे। उन्होंने जी भरकर सोम (अमृत)—पान किया और फिर दक्ष प्रजापति से आने का कारण पूछा। महाराज दक्ष ने अपनी व्यथा सुनायी। भगवान् ब्रह्मा चिन्तामग्न हो गये। तभी उन्हें एक डकार आयी। इस सोम रस की डकार के साथ ही गोरूपधारी एक प्राणी उनके मुख से प्रादुर्भूत हुआ। ब्रह्मा ने उसे 'गोमाता' कहकर पुकारा और दक्ष प्रजापति को प्रदान कर दिया और कहा, 'हे प्रजापति! ये गोमाता तुम्हारी समस्या का समाधान करेंगीं। मनुष्य इन की सेवा से दूध, दही, घी, गोमूत्र, गोबर एवं बछड़े आदि प्राप्त करके दीर्घायु होगा। गोमाता की कृपा से मनुष्य सुखी और समृद्ध हो जायगा। दक्ष प्रजापति ने भगवान् ब्रह्मा को धन्यवाद दिया और गोमाता को लेकर अपने रचना क्षेत्र में आये। दक्ष प्रजापति ने मनुष्य को गोसेवा की विधि समझायी और गोमाता की

सेवा का आदेश देकर वे अन्तर्धान हो गये। गोमाता की कृपा से मनुष्य स्वस्थ, समृद्ध और दीर्घायु वाला बन गया। गोमाता ने

आदिकाल से ही मनुष्य की सहायता की है, उसे शक्तिशाली, बुद्धिमान् और समृद्ध बनाया है। गोमाता की उदारता को देख देवतागण उनकी स्तुति करने लगे। देवों ने गोमाता के विभिन्न अंगों में अपना निवास—स्थान बनाया। वस्तुतः गोमाता परब्रह्म परमात्मा की पोषणात्मिका शक्ति हैं, जो प्राणीमात्र के पालन—पोषण के लिये पृथ्वी पर अवतरित हुई हैं।

नमो गोभ्यः श्रीमतीभ्यः
सौरभेयीभ्य एव च।
नमो ब्रह्मसुताभ्यश्च
पवित्राभ्यो नमो नमः।।

श्रीमती गौओं को नमस्कार! कामधेनु की सन्तानों को नमस्कार! ब्रह्माजी की पुत्रियों को नमस्कार! पावन करने वाली गौओं को बार—बार नमस्कार।

3000 बीघा में एक लाख गोवंश को मिलेगा संरक्षण

छापर में बनने वाली देश की सबसे बड़ी गौशाला का हुआ भूमि पूजन

3000 बीघा में बनेगी आधुनिक गौशाला :— छापर कस्बे (राजस्थान) के श्री रामशंकर गोशाला ट्रस्ट के बीड़ क्षेत्र में देश की सबसे बड़ी आधुनिक गौशाला का निर्माण होगा। 1000 करोड़ रुपए की लागत से करीब 3000 बीघा में बनने वाली प्रस्तावित गौशाला में एक ही स्थान पर करीब एक लाख से अधिक गायों को संरक्षण प्रदान किया जाएगा। यह देश की एक मात्र गौशाला होगी जहां गायों और गोवंश को आधुनिक सुविधाएं मिलेंगीं।

इस प्रस्तावित गौशाला का गोपाल परिवार संघ तथा दातादेवी फाउण्डेशन के दिशा निर्देशन में गात माह मंगलवार शाम गोधूली वेला में ग्वाल संत गोपालानंद सरस्वती, गोकथा वाचक दीदी श्रद्धा सरस्वती के सान्निध्य में भूमि पूजन हुआ।

गाय और गोपाल का देश है भारत :— भूमि पूजन समारोह में ग्वाल संत गोपालानंद सरस्वती महाराज ने कहा कि गोमाता की समर्पित भाव से सेवा, पूजा व सुरक्षा करनी चाहिए। उन्होंने कहा यह गोपाल और गाय का देश है जहां गाय यदि दुखी है तो हम कैसे सुखी रह सकते हैं। उन्होंने कहा कि गाय के गोबर तथा मूत्र की महिमा का वर्णन न केवल वेद पुराण बल्कि आधुनिक ग्रंथो में भी किया गया है। उन्होंने कहा कि भारत देश की सम्प्रभुता व सनातन धर्म की रक्षा के लिए हमें गोमाता का संरक्षण करना अनिवार्य है।

महाराज ने कहा कि मानव जीवन की सार्थकता व सफलता में गाय की भूमिका सर्वोपरि है। इसलिए गोमाता सुखी होगी वह

क्षेत्र भी सुखी व सम्पन्न होगा। ग्वाल संत ने कहा कि छापर के बीड़ क्षेत्र जैसी भूमि देश में कहीं और नहीं। गौशाला निर्माण पर लगने वाले खर्च पर कहा कि हमें सभी गोभक्तों से इस पुनीत कार्य में अंशदान लेना है ताकि गोसेवा के नजरिये से भारत देश एकता के सूत्र में बंध सके। ट्रस्टी विनोद जाजू, बजरंग बाहेती, योगी श्यामनाथ व गो कथावाचक श्रद्धा दीदी ने भी विचार व्यक्त किए।

एक लाख गोवंश की सेवा का संकल्प :– श्री रामशंकर गोशाला अध्यक्ष जयप्रकाश सोनी ने बताया कि कस्बे के सेठ गोविंदराम पेड़ीवाल परिवार की ओर से गोशाला को प्रदत 3000 बीघा जमीन पर गौशाला का निर्माण होगा। गौशाला में एक लाख गोवंश की सेवा का संकल्प लिया गया है जो एक ही जगह पर इतनी संख्या में होना एक रिकॉर्ड होगा।

14 किलोमीटर दीवार : गौशाला के मंत्री राधेश्याम सारड़ा ने बताया कि पांच वर्ष पूर्व में गोशाला की 3000 बीघा भूमि के चारों और 14 किलोमीटर दीवार का निर्माण किया जा चुका है। इसके साथ यहां नंदीशाला का निर्माण भी इसी भूमि पर हो चुका है जिसमें सैकड़ों नंदी की सेवा कार्य चालू है। भूमि पूजन के बाद आने वाले तीन चार वर्ष में इस गौशाला के निर्माण कार्य को पूर्ण कर गोसेवा–सुरक्षा का अभूतपूर्व कार्य छापर कस्बे में होगा। इस कार्यक्रम के अवसर पर ट्रस्टी बजरंगलाल बाहेती, सत्यनारायण राठी, विनोद जाजू, हनुमान लाहोटी, रामकिशन मुंधड़ा, सीताराम पेड़ीवाल, सूर्यप्रकाश बाहेती, रतनलाल पुंगलिया, बीकानेर के राधेश्याम राठी, केसरदेसर के प्रयाग चांडक, नोखा के आसकरण सींथल के बाबूलाल, पालिकाध्यक्ष श्रवण माली, भाजपा अध्यक्ष गजानंद स्वामी, जयराम जांगिड़, रामनिवास जाट, प्रदीप सुराणा, महेश तापड़िया, चन्द्रप्रकाश पेड़ीवाल आदि उपस्थित रहे।

साभार – पत्रिका. चूरू (राज.)

गोमूत्र से होगा डायबिटीज, हार्ट समेत उन्नीस बीमारियों का इलाज

लखनऊ। उत्तर प्रदेश सरकार ने आयुर्वेद को बढ़ावा देने के मकसद से अनोखी पहल की है, जिसके अंतर्गत अब दूध, दही, घी, गोमूत्र और गोबर (पंचगव्य) से आयुर्वेदिक मंजन, मलहम और औषधीय उत्पाद तैयार किए जाएंगे। पंचगव्य के आधार पर बड़े पैमाने पर उत्पाद बनाए जाएंगे, जिससे ग्रामीणों को रोजगार मिलेगा और गोशालाओं की उपयोगिता भी पहले से अधिक बढ़ जाएगी। उत्तर प्रदेश गोसेवा आयोग के ओएसडी डॉ. अनुराग श्रीवास्तव ने बताया कि पंचगव्य आधारित उत्पादों के निर्माण की दिशा में ठोस कदम उठाया जा रहा है। पंचगव्य का महत्व है और इसे वैज्ञानिक दृष्टिकोण से तैयार कर आमजन के लिए लाभकारी औषधियों के रूप में उपयोग में लाया जाएगा।

गोमूत्र में औषधीय गुण विद्यमान होते हैं

विशेषज्ञों के अनुसार गोमूत्र में औषधीय गुण मौजूद होते हैं, जो शरीर की रोग प्रतिरोधक क्षमता को बढ़ाते हैं। सरकार के इस प्रयास के तहत डायबिटीज और हृदय रोग जैसी कुल 19 बीमारियों के इलाज में गोमूत्र आधारित उत्पाद प्रभावी भूमिका निभाएंगे, जिनमें चर्म रोग, गठिया जोड़ों का दर्द, मुंहासे, साइनस, सांस संबंधी रोग, पीलिया, तेज बुखार, एनीमिया, टॉन्सिल, हृदय रोग, चक्कर / सर दर्द, पालिप्स, डैंड्रफ, मधुमेह, गंजापन, अवसाद, रक्त विकार, दांत दर्द आदि शामिल हैं।

साभार – राजस्थान पत्रिका

राजधानी के हर जिले में बनेगी गोशाला, चौबीस घंटे तैनात रहेंगे डाक्टर

नई दिल्लीः राजधानी में बेसहारा गोवंशों की समस्या से निपटने के लिए दिल्ली सरकार सभी 11 जिलों में गोशाला बनाएगी। सूत्रों के अनुसार, पशुपालन विभाग ने एक पत्र जारी कर सभी जिलों के डिप्टी डायरेक्टर, जिला इंचार्ज और पशु चिकित्सा अधिकारियों से कहा है कि वे राजस्व विभाग के अधिकारियों के साथ मिलकर उन सरकारी जमीनों का निरीक्षण करें, जहां गोशाला बनाई जा सकती है। प्रत्येक जिले ने दो–दो स्थानों की जानकारी भेज दी है, जिनमें से एक का चयन किया जाएगा। मध्य दिल्ली में सिविल लाइंस स्थित मुकुंदपुर में बताई गई जगह पर मुहर भी लग गई है, जबकि अन्य स्थानों के लिए प्रक्रिया जारी है। जैसे ही मंजूरी मिलेगी, निर्माण कार्य शुरू कर दिया जाएगा। गोशालाएं आधुनिक सुविधाओं से लैस होंगीं। प्रत्येक गोशाला में एक बड़ा कक्ष तैयार किया जाएगा, जहां चिकित्सा उपकरण रहेंगे। यहां 24 घंटे पशु चिकित्सक उपलब्ध रहेंगे। इसके अलावा चारे और स्वच्छ पानी की पर्याप्त व्यवस्था की जाएगी। गोशाला में अनुभवी कर्मचारियों की नियुक्ति की जाएगी। वे गोवंश के रखरखाव, सफाई और गोबर प्रबंधन का कार्य करेंगे। प्राथमिकता उन लोगों को दी जाएगी, जो ग्रामीण क्षेत्रों से आते हैं और जिन्हें गोवंशपालन का अनुभव हो।

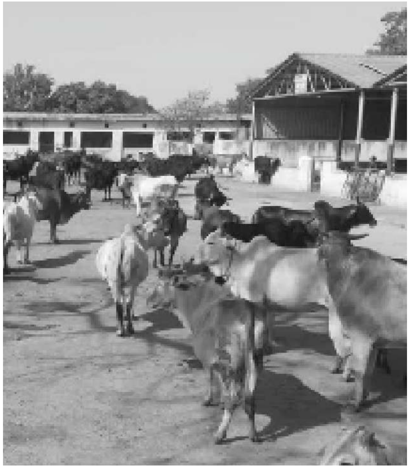

– लोकेश शर्मा, जागरण

11 जिलों में प्रस्तावित चिह्नित स्थान

जिला	प्रस्तावित स्थान
दक्षिण	पश्चिमी–कापासकेहड़ा स्थित रेवता और नजफगढ़ स्थित सुरखपुर
पश्चिमी	पंजाबी बाग स्थित नीलवाल और बापोरिया
मध्य दिल्ली	सिविल लाइंस स्थित मुकुंदपुर (जगह फाइनल)
दक्षिणी	साकेत स्थित सहोअरपुर और महरौली स्थित गदाइपुर
उत्तर–पूर्वी	करावल नगर स्थित सादतपुर और बदरपुर खादर
पूर्वी दिल्ली	मयूर विहार स्थित कोंडली और घरोंडा नीमका बांगर
उत्तर–पश्चिमी	कांझावला स्थित नीजमपुत और जाँती
दक्षिण–पूर्वी	सरिता विहार स्थित जसौला गांव व डिफेंस कालोनी स्थित ओखला गांव
उत्तरी	अलीपुर स्थित सुंगरपुर टिगीपुर और नरेला
शाहदरा	मंडोली और भीकम सिंह कालोनी
नई दिल्ली	वसंत विहार स्थित समालखा और रजोकरी

जैविक आहार, जो बढ़ा रहा गोवंश की प्रजनन क्षमता

देहरादून की डा. बीनू बनीं पशुओं की सेहत रक्षक
काशीपुर आइआइएम की मदद से शुरू हुआ स्टार्टअप बना माडल

काशीपुर (उत्तराखंड)। बीमार प्राणियों की पीड़ा को वह अच्छे से समझती हैं। वह जानती हैं कि बाहरी घाव, चोट या बीमारी तो दवा, मरहम पट्टी से ठीक हो सकती है, लेकिन शारीरिक रूप से मजबूती व निरोगी रहने के लिए पौष्टिक व गुणवत्तापूर्ण आहार ज्यादा जरूरी है। इसी सेवा कर्म के भाव को लेकर आगे बढ़ रहीं डा. बीनू भदौरिया गोवंशपालकों के लिए एक उम्मीद की किरण बनकर उभरी हैं।

पशु चिकित्सक डा. बीनू ने नौकरी छोड़ भारतीय प्रबंधन संस्थान (आइआइएम), काशीपुर से ट्रेनिंग व फंडिंग हासिल की। फिर उन्होंने गोवंश (प्राणियों) में बांझपन की समस्या के समाधान व उन्हें स्वास्थ्यप्रद प्राकृतिक आहार पर शोध किया। इसके बाद स्थानीय और जैविक सामग्रियों से विशेष पशु आहार विकसित किया, जो गोवंश और अन्य प्राणियों की प्रजनन क्षमता बढ़ाने के साथ ही उनके स्वास्थ्य को भी बेहतर बनाता है।

वन विहार देहरादून निवासी पशु चिकित्सक डा. बीनू ने 2019 में सरकारी पशु चिकित्सक के पद से इस्तीफा दे दिया। पेशे में रहते हुए उन्हें प्राणियों की बीमारियों, उपचार व खान–पान आदि के बारे में बेहतर ज्ञान था। उन्होंने इंसान की तरह ही प्राणियों के लिए भी जैविक आहार पर प्रोजेक्ट आइआइएम काशीपुर के समक्ष रखा और शोध किया। आइआइएम ने फाउंडेशन फार इनोवेशन एंड एंटरप्रेन्योरशिप डेवलपमेंट (फीड) प्रोजेक्ट के तहत इस स्टार्टअप को 20 लाख रुपये की फंडिंग दे दी। यहीं से डा. बीनू ने स्टार्टअप **'ओजस एनिमल फूड'** की शुरुआत की। आइआइएम ने इसे देश के लिए माडल माना है। आज उत्तराखंड व उ.प्र. के 50 गांवों में करीब 10 हजार गोवंशपालकों तक उनके आहार की पहुंच है।

37 लाख रुपये से शुरुआत

डा. बीनू ने आइआइएम से 20 लाख की फंडिंग मिलने के बाद 17 लाख रुपये बैंक से लोन लेकर वर्ष 2019 में स्टार्टअप शुरू किया। पहले साल उन्हें एक करोड़ का टर्नओवर हुआ जो वर्ष 2024–25 में बढ़ कर 3.85 रुपये हो गया। लाघा रोड देहरादून में डा. बीनू ने प्लांट स्थापित किया है। यहां से तैयार उत्पाद उत्तराखंड और पश्चिमी उत्तर प्रदेश के कई

जिलों में सप्लाई होता है, जिसे अब अन्य राज्यों में भी सप्लाई करने की तैयारी हो रही है। देहरादून के मालसी डियर पार्क में हिरन, सांभर और खरगोशों के लिए यही आहार उपलब्ध कराया जा रहा है। डा. बीनू का लक्ष्य महिला स्वयं सहायता समूहों को जोड़कर उत्पादन को विकेंद्रित करने का है। यह पहल न केवल प्राणियों के स्वास्थ्य और कृषि उत्पादकता को बढ़ाएगी, बल्कि उत्तराखंड के स्वयं सहायता समूहों को भी समृद्ध करेगी।

केमिकल युक्त आहार से प्राणियों को नुकसान

डा. बीनू बताती हैं कि केमिकल युक्त विशेष रूप से उच्च यूरिया वाले आहार गोवंश की प्रजनन प्रणाली को नुकसान पहुंचाते हैं। इससे बांझपन और अंडे के उत्पादन में कमी आती है। उन्होंने इसी समस्या को ध्यान में रख कर जैविक आहार तैयार किया है। इस आहार में गेहूं, मक्का, बाजरा, मडुवा, भूसी, जौ, सरसों, मूंगफली, बिनौला और सोयाबीन जैसे अनाजों का उचित सम्मिश्रण मानक पर तैयार होता है। यह आहार पशुओं की उम्र और स्वास्थ्य के अनुसार विभिन्न श्रेणियों में उपलब्ध है। गोवंशपालकों ने इसके उपयोग से गोवंश के स्वास्थ्य में उल्लेखनीय सुधार भी अनुभव किया। इसकी कीमत 1200—1500 रुपये प्रति 50 किलो रखी गई है।

__डा. बीनू को आइआइएम काशीपुर से 20 लाख__ की फंडिंग भी दी गई है। उनकी यह पहल सिर्फ एक स्टार्टअप नहीं बल्कि उत्तराखंड जैसे पर्वतीय राज्य में आजीविका, प्राणियों के स्वास्थ्य और प्राकृतिक खेती को बढ़ावा देने वाला एक सफल माडल है। यह स्टार्टअप देशभर के किसानों के लिए प्रेरणा बन सकता है।

— सफल बत्रा, डायरेक्टर, फीड आइआइएम काशीपुर

निराश्रित गोमाता का आश्रय
श्री माधव गौ उपचार केन्द्र

निराश्रित गोमाता जो दुर्घटना में घायल या बीमार हो जाती हैं, उनके लिए अनवरत सेवा भाव से कार्य कर रहे केन्द्र का नाम है **'श्री माधव गौ उपचार केन्द्र'**। यह केन्द्र गुलाबपुरा (भीलवाड़ा, राजस्थान) में संचालित है। सर्व समाज और संघ के स्वयंसेवकों के सहयोग से प्रारम्भ इस केन्द्र से अब तक एक हजार गायों का उपचार किया जा चुका है। वर्तमान में केन्द्र पर 2 सेवा भावी चिकित्सक अपनी निःशुल्क सेवाएं दे रहे हैं।

बीती 22 मई को केन्द्र द्वारा गोवंश के लिए सीमेन्ट से बने पानी पीने के 250 पात्रों का निःशुल्क वितरण किया गया। अपने जन्मदिन या परिवार में कोई शुभ अवसर होने पर समाज जन गौ केन्द्र पर जाकर आर्थिक सहयोग करते हैं। आसींद जिले के प्रचार प्रमुख श्री विनोद कुमार ने बताया कि यह केन्द्र वर्ष 2022 में प्रारम्भ किया गया था।

— पाथेण कण

मानव सेवा के लिए पूर्ण समर्पण

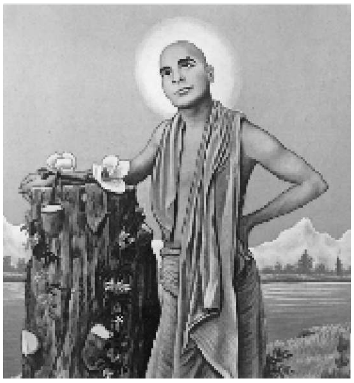

तीर्थराम जी जब एमए की परीक्षा का फार्म भर रहे थे तो कॉलेज के अंग्रेज प्रिंसिपल ने उनकी सच्ची लगन, योग्यता और प्रतिभा से प्रभावित होकर कहा– 'क्या मैं तुम्हारा नाम आईसीएस की परीक्षा के लिए भेज दूँ?' तीर्थराम कुछ समय के लिए विचार मग्न रहे। उनकी आंखों में आंसू भर आये। डबडबाती आंखों से वे बोले– 'मैंने इतने परिश्रम से ज्ञान का जो कोष पाया है, उसे मैं धनवान बनने के लिए व्यय नहीं कर सकता। मैंने तो यह ज्ञान इसलिए अर्जित किया है कि इस सम्पदा से स्वयं को तथा समाज को भी सुखी बनाऊँ। तो फिर एमए पास करने के पश्चात् क्या करोगे?' प्रिंसिपल ने फिर से प्रश्न किया। तीर्थराम बोले 'यदि कोई विचार है तो यही कि अपना सारा जीवन और प्रत्येक सांस प्रभु की सेवा में लगाते हुए मानव मात्र की सेवा करता रहूँ।' प्रिंसिपल अपने होनहार शिष्य के विचारों को सुनकर आश्चर्यचकित और बेहद प्रभावित हुए। परीक्षा उत्तीर्ण कर उन्होंने वेदान्त को अपने जीवन के माध्यम से समझा और मृत्युपर्यन्त समाज सेवा में संलग्न रहे। आगे चल कर तीर्थराम से वे **'स्वामी रामतीर्थ'** नाम से जगत में विख्यात हुए।

आत्मनिर्भर बनें गौशालाएं

प्रदेश की गौशालाओं को आत्मनिर्भर व राजस्थान को जैविक राज्य बनाने हेतु कार्यरत संगठन के प्रतिनिधि मण्डल का कहना है कि राजस्थान की 3500 गौशालाओं और 13 लाख गौवंश से प्रतिवर्ष 474.5 करोड़ किलोग्राम गोबर का उत्पादन होता है। 2 रुपये प्रति किलोग्राम दर से यह गोबर खरीदने पर गौशालाओं को 949 करोड़ रुपये का राजस्व प्राप्त होगा। 1. 50 लाख प्रत्यक्ष और 3 लाख अप्रत्यक्ष लोगों को रोजगार मिलेगा।

श्रीमती उदय शर्मा का स्वर्गवास

श्रीभगवान शर्मा जी (पूर्व प्रांत गोरक्षा प्रमुख) की धर्मपत्नी श्रीमती उदय शर्मा का स्वर्गवास गत 10 जुलाई को हो गया। उनकी उम्र लगभग 76 वर्ष थी। उनके एक बेटा नागेन्द्र और दो बेटियां दीपिका एवं यामिनी हैं जो सभी वैवाहित हैं। गोमाता के श्रीचरणों में प्रार्थना है कि वे उन्हें मोक्ष प्रदान करें और परिवार के सदस्यों को इस असीम दुःख को सहने की शक्ति दें।

गोरक्षा विभाग, विहिप की ओर से उनकी दिवंगत आत्मा के प्रति हार्दिक श्रद्धांजलि!

Sanjay Raman "Vidyavachaspati"

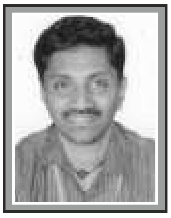

GAU-VIGYAN

EXPLORING THE SCIENTIFIC STRENGTH OF INDIA'S INDIGENOUS CATTLE

Gau-Vigyan, or Cow Science, is an evolving interdisciplinary field in India that focuses on the scientific relevance of indigenous cows (Bos indicus) in agriculture, health and environmental sustainability. Indian native breeds such as Gir, Sahiwal, Tharparkar and Red Sindhi are known for their adaptability to tropical climates, natural disease resistance and lower maintenance requirements. These qualities make them ideal for low-input, sustainable rural ecosystems.

One of the most significant scientific distinctions of Indian cows lies in their milk composition. Unlike exotic breeds like Jersey and Holstein Friesian, native cows produce A2 beta-casein protein-rich milk, which is easier to digest and considered healthier. A2 milk has been linked with reduced risks of cardiovascular diseases, Type-1 diabetes and autism in some studies. This biochemical advantage has led to increased interest in promoting native dairy systems and reviving Indigenous breeds.

Another core component of Gau-Vigyan is the application of cow dung (gomaya) and

cow urine (gomutra) in agriculture and medicine. Cow dung is rich in beneficial microbes and organic matter, making it an excellent natural fertilizer and pesticide. It plays a central role in organic farming and regenerative agriculture. The microbial content improves soil structure, enhances nutrient cycling and increases crop yield without harmful environmental effects. In Zero Budget Natural Farming (ZBNF), preparations like Jeevamrit, a fermented mix made from cow dung, urine, jaggery and pulse flour, have shown to significantly improve soil health and promote sustainable crop productivity.

Distilled cow urine has attracted scientific attention for its antimicrobial, antifungal and antioxidant properties. Preliminary pharmacological studies suggest its potential as an immune booster and bio-enhancer in drug formulations. It is also being explored for its applications in managing diabetes, liver ailments and skin infections. While traditional systems like Ayurveda have long incorporated gomutra, modern research is now validating these uses with laboratory studies.

Beyond farming and health, indigenous cows contribute to renewable energy through biogas production. Cow dung-based biogas plants generate clean cooking fuel and electricity, while the slurry residue serves as an effective organic fertilizer. This dual output supports rural energy needs and promotes waste-to-resource models that are both economical and environmentally sustainable.

Technological innovations are also expanding the utility of cow-based by-products. Eco-friendly items like dung-based packaging, natural floor disinfectants, wall paints and mosquito repellents are now being developed and commercialized. Scientific validation of the antibacterial and antifungal properties of these products has opened new markets aligned with sustainability and green economy objectives.

Efforts in genetic conservation form a crucial part of Gau-Vigyan. Organizations like the National Bureau of Animal Genetic Resources (NBAGR) are actively engaged in identifying and preserving pure native breeds through genetic profiling, DNA mapping and selective breeding programs. This is essential for maintaining biodiversity and preventing dilution through uncontrolled cross-breeding with exotic cattle.

The scientific scope of Gau-Vigyan intersects with multiple disciplines-veterinary science, agronomy, biotechnology, pharmacology and environmental studies. As India seeks sustainable alternatives to chemical-intensive agriculture and fossil-fuel-dependent energy systems, indigenous cows offer scalable, eco-friendly solutions. Their role in building a circular, resilient and self-reliant rural economy is increasingly being acknowledged by researchers, policymakers and agripreneurs.

Gau-Vigyan, when stripped of myths and examined through the lens of modern science, emerges as a valuable knowledge system. It offers practical tools for ecological farming, rural development, renewable energy and integrative health. Promoting scientific research on native cows is not just about preserving tradition; it is about embracing a holistic and future-ready approach to India's development.

Dr. Aastha Pathak

The Eternal Beauty and Glory of DESI COW (GOMATA)

The Desi Cow, revered as Gomata, is not merely an animal in Bharat; she is an embodiment of motherhood, divinity, and natural harmony. For thousands of years, our civilization has placed her at the center of our dharma, economy, and ecology. Every ancient scripture, from the Vedas to the Puranas, sings the glory of the cow as the nourisher of gods and men alike. Her milk is likened to amrita, offering strength to the body and purity to the mind. But it is not only the milk—her curd, ghee, urine, and dung, collectively known as Panchagavya, are revered for their medicinal, spiritual, and agricultural benefits.

Scientifically, the Desi Cow is unparalleled. She produces A2 milk, rich in nutrients and free from the harmful A1 beta-casein found in foreign breeds. The hump of the Indian cow contains a special Surya Ketu Nadi, which is believed to absorb solar energy, fortifying her milk with medicinal properties. Cow dung is an excellent natural fertilizer and biofuel, while cow urine has been shown to possess antimicrobial and antioxidant properties. No part of the Desi Cow is wasteful—every element supports a sustainable, self-reliant lifestyle.

In the spiritual dimension, Gomata is revered as the abode of 33 crore deities. Worship of the cow is equivalent to performing grand yajnas. The presence of cows sanctifies the environment, and feeding them is considered an act of immense punya (merit). Lord Krishna, the protector of cows, set the highest example of love and service toward them. The cow's bellows are considered auspicious, her gaze purifying, and her footprints sacred. Saints like Ramana Maharshi and Chaitanya Mahaprabhu served cows as fellow beings with great devotion.

Nationalist leaders like Swami Vivekananda and Bal Gangadhar Tilak considered cow protection central to Bharatiya identity. VHP, through its tireless

work in gau-raksha (cow protection), gau-shalas (cow shelters), and awareness programs, has revived national consciousness around the significance of the Desi Cow. Cow slaughter is not merely a religious issue; it is a cultural wound, an assault on Bharat's soul. Gau seva is seva to the motherland. The cow binds the nation with threads of tradition, spirituality, and rural sustainability.

Economically, the Desi Cow is the heart of rural Bharat. Her milk, ghee, dung, and urine support organic farming, rural industries, and Ayurvedic medicine. With Panchagavya-based products gaining global recognition, she contributes to swadeshi entrepreneurship. Cow-based farming reduces dependency on chemical fertilizers, restoring soil health. Villages centered around gau seva are economically and ecologically stable. Unlike factory-farmed animals, the Desi Cow promotes a zero-waste, compassionate economy.

In Ayurveda, cow products are used to treat numerous ailments, from skin diseases to cancer. Gau-mutra (cow urine) is distilled into arka, a potent health tonic. Cow ghee is used in internal purification therapies like snehana and basti. The ancient rishis formulated hundreds of formulations with Panchagavya. Even modern scientific institutions are now validating these traditional remedies. Her contributions to human health, ecology, and economy cannot be overstated.

Gomata is not meant to be exploited, killed, or dishonored. She is to be revered, served, and protected. Leather derived from cow slaughter is against the dharmic principle of ahimsa (non-violence) and must be rejected. Gomata gives without asking—milk, warmth, nutrition, and spiritual elevation. To hurt her is to violate the deepest values of our civilization. In every village where cows are loved and protected, prosperity follows.

The Desi Cow is our living mother. She breathes the same air, walks the same earth, and yet lifts us toward the divine. Her beauty lies not only in her eyes or gait but in her soul, which radiates love, patience, and serenity. She is Bharat's eternal symbol of strength, compassion, and sustainability. To serve her is to serve Sanatana Dharma. Let every Indian take a vow today—No cow slaughter. No leather from her sacred body. Only love, respect, and lifelong devotion to Gomata.

May Gau Mata bless our land with peace, prosperity, and purity.

हार्दिक निवेदन

सभी गोभक्त–गोप्रेमी बंधुओं से करबद्ध अनुरोध है कि वे इस पत्रिका का सदस्य अवश्य बनें और अन्य गोभक्तों को भी सदस्य बनायें। कृपया सभी लोग अपना वार्षिक अथवा आजीवन सदस्यता शुल्क निम्नलिखित बैंक व खाता नंबर में जमा कराएं –

पंजाब नेशनल बैंक, बसंत लोक, नई दिल्ली

खाता नम्बर – 04072010038910 IFSC CODE : PUNB0040710

नोट – शुल्क "भारतीय गोवंश रक्षण संवर्द्धन परिषद" के नाम पर जमा करें। सम्पर्क सूत्र : 011.26174732

pnb punjab national bank

...the name you can BANK upon!

अब आप यूपीआई के माध्यम से भी पत्रिका का शुल्क जमा कर सकते हैं

SCAN & PAY USING ANY BHIM UPI APP

9958710672m@pnb

MERCHANT: BHARTIYA GOVANSH RAKSHAN SAMVARDHAN PARISHAD

BHIM | UPI

BHARAT INTERFACE FOR MONEY | UNIFIED PAYMENTS INTERFACE

वर्षा ऋतु में गोमाता की छत्रछाया

– नवल डागा

"LPC DELHI, DELHI PSO, DELHI RMS, DELHI-6"
Email : gosampada@gmail.com
website : www.vhp.org

Registered No. DL-SW-01/4027/24-26
RNI No. 69508/98 प्रस्तुति : 13–14
प्रकाशन तिथि : 11 अगस्त, 2025

जेएनयू में शाकाहार और मांसाहार पर नया विवाद

*यथार्थ में प्राकृतिक रूप से ही मनुष्य एक सामाजिक और शाकाहारी प्राणी है और उसका समाज तथा प्रकृति के साथ अटूट संबंध है। बुद्धि में सर्वश्रेष्ठ होने के नाते मनुष्य का यह परम कर्तव्य हो जाता है कि वह प्रकृति के नियमों का उल्लंघन न करे और अपने आहार–व्यवहार को संयमित रखे। दुर्भाग्य से मनुष्य ने लोभ–लालच में आकर अपने आहार–व्यवहार को असंयमित कर दिया, जिसके दुष्परिणामस्वरूप वह भयंकर बीमारियों एवं बड़ी–बड़ी विपदाओं से जूझ रहा है। वास्तव में भारत जैसे आध्यात्मिक–अहिंसक (पूर्व में) राष्ट्र में मांसाहार सबसे ज्यादा घृणित और निन्द्य पदार्थ माना जाता है। हमारे पवित्र ग्रंथों में प्रत्यक्ष अथवा परोक्ष रूप से कहीं भी मांसाहार का समर्थन नहीं किया गया है। विभिन्न धर्मों में अनेक मत–मतांतर के अनंतर में **"अहिंसा परमो धर्म"** मत का सभी समर्थन करते हैं। इसलिए सभी को सत्य की अनुभूति करना चाहिए कि आज हम जो क्रिया करेंगे, वही प्रतिक्रिया बन कर लौटेगी। आज यदि हमारी वजह से किसी प्राणी की चीत्कार निकलेगी तो निश्चित ही एक दिन हमें भी वही पीड़ा होगी और हमारे मुख से भी वैसी ही चीत्कार निकलना अवश्यंभावी है। अतः हमें पुनः पूर्ण पवित्र–पावन गोवंश आधारित जीवन शैली अपनाना अतिशय आवश्यक है।* **–सम्पादक**

नई दिल्ली। जवाहरलाल नेहरू विश्विद्यालय (जेएनयू) के माही–मांडवी हास्टल में शाकाहारी और मांसाहारी भोजन को लेकर एक नया विवाद सुर्खियों में है। इस मामले ने एक बार फिर परिसर में वैचारिक टकराव को जन्म दिया है, जहां जेएनयू छात्र संघ (जेएनयूएसयू) और अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद (एबीवीपी) आमने–सामने हैं। विवाद की जड़ हास्टल मेस में कथित तौर पर शाकाहारी और मांसाहारी छात्रों के लिए अलग–अलग बैठने की व्यवस्था को लेकर है। वामपंथी विचारधारा से जुड़े जेएनयूएसयू ने आरोप लगाया है कि माही–मांडवी हास्टल के एबीवीपी से संबद्ध अध्यक्ष ने मेस में शाकाहारी और मांसाहारी भोजन करने वालों के लिए टेबल अलग कर दिए हैं। जेएनयूएसयू के अध्यक्ष का कहना है कि यह व्यवस्था हास्टल के नियमों का उल्लंघन है और छात्रों के बीच विभाजन पैदा करने की कोशिश है। उन्होंने इसे ''नफरत की राजनीति'' करार देते हुए छात्रों से एकजुट होकर इसका विरोध करने की अपील की। यूनियन ने इस मुद्दे पर हास्टल के बाहर देर शाम प्रदर्शन भी किया, जिसमें छात्रों ने ''खाने की आजादी'' और ''सामाजिक समरसता'' के नारे लगाए।

दूसरी ओर, एबीवीपी ने इन आरोपों को सिरे से खारिज किया है। एबीवीपी के पदाधिकारी व जेएनयूएसयू के संयुक्त सचिव वैभव मीणा ने कहा कि यह कोई नई व्यवस्था नहीं है, बल्कि कुछ शाकाहारी छात्रों की सहमति से लिया गया निर्णय है। सावन का महीना चल रहा है और कई छात्र धार्मिक कारणों से शाकाहारी भोजन पसंद करते हैं। कुछ छात्रों ने मांसाहारी भोजन करने वालों के साथ एक ही टेबल पर बैठने में असहजता जताई, जिसके बाद आपसी सहमति से अलग–अलग बैठने का फैसला हुआ। इसमें हास्टल प्रशासन या अध्यक्ष का कोई दबाव नहीं था। मीणा ने लेफ्ट विंग पर इस मुद्दे को अनावश्यक रूप से राजनीतिक रंग देने का आरोप लगाया। हास्टल के कुछ अन्य छात्रों का कहना है कि यह विवाद छोटे स्तर पर शुरू हुआ, लेकिन इसे वैचारिक टकराव क रूप दे दिया गया।

माही–मांडवी हास्टल के एक छात्र ने नाम न छापने की शर्त पर कहा कि यहां विभिन्न संस्कृतियों और खानपान की आदतों वाले छात्र रहते हैं। कुछ लोग सावन में मांसाहार से परहेज करते हैं तो उनकी भावनाओं का सम्मान होना चाहिए, लेकिन इसे हास्टल नियमों का उल्लंघन बताकर प्रदर्शन करना अतिशयोक्ति है। जेएनयू प्रशासन का कहना है कि मेस में मेन्यू और व्यवस्था छात्रों की निर्वाचित कमेटी द्वारा तय की जाती है। किसी भी बदलाव के लिए सभी पक्षों की सहमति जरूरी है। यह समिति के हाथ में होता है। यह पहली बार नहीं है जब जेएनयू में खानपान को लेकर विवाद हुआ हो। वर्ष 2022 में कावेरी हास्टल में रामनवमी पर ऐसा ही एक विवाद हुआ था, जिसमें जमकर हिंसा भी हुई थी।

साभार – दैनिक जागरण

**प्रकाशक व मुद्रक राजेन्द्र प्रसाद सिंहल ने रायल प्रेस,
बी 81, ओखला इंडस्ट्रीयल एरिया, फेस-1, नई दिल्ली से मुद्रित कर भारतीय गोवंश रक्षण संवर्धन परिषद् (विहिप)
संकटमोचन आश्रम, सेक्टर-6, रामकृष्णपुरम्, नई दिल्ली-22 के लिए प्रकाशित की। संपादक - देवेन्द्र नायक**